बी. एड. प्रथम वर्ष
सत्र - 2019 -2020 /2021
विषय - समकालीन भारत एवं शिक्षा
यूनिट - 4 (a)
प्रकरण - गुणवत्तपूर्ण शिक्षा
व्याख्यान सं. - 03

डॉ. अमोद कुमार सिन्हा
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
AND कॉलेज,
शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

भूमिका

भारत विविध संस्कृतियों वाला समाज है। भारतीय समाज अनेक प्रादेशिक व स्थानीय सांस्कृत्यों से मिलकर बना है। स्पष्ट है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था भी समाज में निहित इस सांस्कृतिक विविधता के अनुरूप होना चाहिए। साथ ही शिक्षा व्यस्था को हर बच्चे की व्यक्तिक विभिन्नता का ध्यान रखने वाला होना चाहिए। सभी भारतीयों को शिक्षिक व विकसित होने का सामान अवसर मिलना चाहिए। **सर्व-शिक्षा अभियान** के तहत हमने सबों को शिक्षित करने के लक्ष्य को तो प्राप्त करने की ओर अग्रसर हो चले हैं, किन्तु जब बात गुणवत्ता की होती है तो हमारा देश काफी पीछे है।

हाल के वर्षों में सर्कार के ध्यान भी इस ओर आकृष्ट हुआ है। कुछ महीने पहले **प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी** ने **मन की बात** के दौरान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर इस प्रकार ज़ोर दिया, "अब तक सरकार का ध्यान देश भर में शिक्षा के प्रसार पर था, किन्तु अब वक्त आ गया है की ध्यान शिक्षा की गुणवत्ता पैर दिया जाए। अब सरकार को स्कूलिंग की बजाय ज्ञानार्जन पर अधिक ध्यान देना चाहिए।"

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अर्थ

ग्लोबल मॉनिटरिंग रिपोर्ट 2005 के अनुसार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु निम्नलिखित दो सैद्धांतिक विशेषताओं का होना आवश्यक है:-

1. अधिगमकर्ता का संज्ञानात्मक विकास हर शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य होना चाइये।
2. शिक्षा की भूमिका का निर्धारण उत्तरदायित्वपूर्ण नागरिकों में मूल्यों व अभिवृद्धि का विकास और उनके सृजनात्मक व संवेगात्मक विकास पर ज़ोर देने के सन्दर्भ में होना चाहिए।

कहने का अर्थ है कि गुणवत्ता इस तथ्य पर निर्भर करती है की छात्र कितनी अच्छी तरह से अपने व्यक्तित्व व सामाजिक विकास हेतु सीख पते हैं।

इस शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् विद्यार्थियों में निम्नलिखित दख्स्तओं का विकसित होना अपेक्षित है:-

1. वे विश्लेषणात्मक शैली में पढ़ना सीख जाएँ।
2. उनमे तार्किक क्षमताएं विकसित हो।
3. उनमे पारस्परिक संवाद व् विचारों के आदान-प्रदान की उत्कृष्ट क्षमता विकसित हो।
4. वे जीवन के यथार्थ परिस्थितियों में ज्ञान के उपयोग करने में दक्षता प्राप्त करें।
5.

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के आयाम

शिक्षा में गुणवत्ता हेतु कुछ महत्वपूर्ण आयाम, जिन्हे "6As " के नाम से जाना जाता है, निम्नलिखित हैं :-

1. **आंकलन (Assesment)** - शिक्षा व्यवस्था का निरंतर आंकलन करने से गुणवत्ता स्तर सुधारने में मदद मिलती है। इस क्षेत्र में सफलता का उदाहरण जॉर्डन देश से   जा सकता है।

2. **स्वायत्तता (Autonomy) -** इसका तात्पर्य विद्यालयों को संसाधनों के प्रयोग हेतु स्वायत्तता देने से है ताकि वे अपने विद्यालयों को प्रतिद्वन्द्वतापूर्ण तरीके से सुधार सकें। स्वायत्तता इस बात पर निर्भर करती है कि क्या शिक्षा व्यस्था को बदलने बढ़ती हुई स्वायत्तता के साथ-साथ उत्तरदियत्वापूर्ण निर्वाह में भी वृद्धि हो रही है ?

3. **उत्तरदियत्व (Accountability) -** इसके इसके अंतर्गत अच्छी शिक्षा प्रदान करने का उत्तरदायित्व स्थानीय अधिकारियों, विद्यालय केप्रधानाचार्य, शिक्षक एवं छात्रों की सामुदायिक सहभागिता पर निर्भर करता है। उनपर संसाधनों के दोहन व क्रियान्वयन का दायित्व होता है। साथ ही वे विद्यालय में अधिगम वातावरण में सुधार करने व वांछित परिणाम देने हेतु उत्तरदायी होते हैं।

To be Continued in the next class